माध्यमिकः पाठ्यक्रमः

209 - संस्कृतम्

द्वितीयपुस्तकम्

अभिकल्पनं निर्माणं च
राम नारायण मीणा

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62,
नोएडा-201309 (उ०प्र०)
Website: www.nios.ac.in, Toll Free No. 18001809393

© National Institute of Open Schooling

(Copies)

Published by the Secretary, National Institute of Open Schooling, A-24-25, Institutional Area, NH-24, Sec. 62, Noida-201309, and printed by

रा.मु.वि.शि.सं. सलाहकार समिति

डॉ. एस.एस. जेना
अध्यक्ष

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेशक (शैक्षिक)

श्रीमती गोपा बिश्वास
संयुक्त निदेशक (शैक्षिक)

पाठ्यचर्या समिति

डॉ. के.के. मिश्र
प्रो. (सेवानिव त्त)
एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
एवं
पूर्व निदेशक राष्ट्रीय संस्कृत
संस्थान, नई दिल्ली

प्रो. हरिदत्त शर्मा
अध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद, उ. प्र.

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
प्राचार्य,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(जयपुर परिसर)
जयपुर (राजस्थान)

डॉ. हरिराम मिश्र
सहायक आचार्य
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

श्रीमती शशिप्रभा गोयल
रीडर (सेवानिव त्त)
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

डॉ. संजय कुमार तिवारी
सहायक आचार्य
बौद्धिक अध्ययन केन्द्र
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दयाशंकर तिवारी
सहायक आचार्य
संस्कृत विभाग
राजधानी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय
उप–प्रधानाचार्य (सेवानिव त्त)
रा. सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय
बी–4, पश्चिम विहार
नई दिल्ली

डॉ. राजीव कुमार मिश्र
प्राध्यापक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय
दिल्ली

विजेन्द्र सिंह
प्राध्यापक (संस्कृत)
रा. व. मा. वि., एम.बी. रोड़,
पुष्पविहार, दिल्ली

राम नारायण मीणा
शैक्षिक अधिकारी (संस्कृत)
रा.मु.वि.शि.सं.
नोएडा, (उ.प्र.)

अभिकल्पन एवं निर्माण

राम नारायण मीणा, शैक्षिक अधिकारी (संस्कृत), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा, (उ.प्र.)

संपादक मंडल

डॉ. हरिराम मिश्र (प्रधान संपादक) ़

सहायक आचार्य (संस्कृत)
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

श्रीमती शशिप्रभा गोयल
रीडर (सेवानिव त्त)
रा.शै.अनु.प्र.प.,
नई दिल्ली

भास्करानन्द पाण्डेय
उप–प्रधानाचार्य (सेवानिव त)
सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय
नई दिल्ली

राम नारायण मीणा
शैक्षिक अधिकारी (संस्कृत)
रा.मु.वि.शि.सं.
नोएडा, (उ.प्र.)

विजेन्द्र सिंह
प्राध्यापक (संस्कृत)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एम.बी. रोड. पुष्पविहार, दिल्ली

पाठ-लेखक

डॉ. हरिराम मिश्र
सहायक आचार्य (संस्कृत)
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. हरिदत्त शर्मा
अध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद, उ.प्र.

डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी
रीडर (संस्कृत)
शिवाजी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दि.

श्रीमती शशिप्रभा गोयल
रीडर (सेवानिव त्त)
रा.शै.अनु.प्र.प.
नई दिल्ली

प्रो. श्रीधर वशिष्ठ
डीन (सेवानिव त)
ला.ब.शा.सं. विद्यापीठ
नई दिल्ली

डॉ. संजय कुमार तिवारी
सहायक आचार्य
बौद्धिक अध्ययन केन्द्र दिल्ली
विश्वविद्यालय नई दिल्ली

डॉ. भास्करानंद पाण्डेय
उप–प्रधानाचार्य (सेवानिव त)
सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय
बी–4, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

ओम प्रकाश ठाकुर
उप–प्रधानाचार्य (सेवानिव त्त)
राजकीय विद्यालय, पीतमपुरा
नई दिल्ली

राजीव कुमार मिश्र
प्राध्यापक (संस्कृत)
राजकीय विद्यालय, पीतमपुरा
नई दिल्ली

विजेन्द्र सिंह
प्राध्यापक (संस्कृत)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एम.बी. रोड. पुष्पविहार, दिल्ली

राम नारायण मीणा
शैक्षिक अधिकारी (संस्कृत)
रा.मु.वि.शि.सं.
नोएडा, (उ.प्र.)

दयाशंकर तिवारी
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
राजधानी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

रेखा चित्रांकन समिति

श्रीमती गीतिका गुप्ता,
ग्राफिक आर्टिस्ट

महेश शर्मा
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा, (उ.प्र.)

मुखप ष्ठ : श्री मुकुल गर्ग

लेजर टाइपसैटिंग :- शिवम ग्राफिक्स, रानी बाग दिल्ली.

अध्यक्षपक्षतः सन्देशः

प्रियविद्यार्थिन्

यथा यथा जनसामान्यस्य विशिष्टानां वर्गाणां च शैक्षिक्यः अपेक्षाः वर्धन्ते, ताः आकांक्षाः पूरयितुं शिक्षणविधीनां तकनीकादीनामपि आधुनिकीकरणम् अपेक्षितं भवति। शिक्षा परिवर्तनस्य माध्यमः। यथोचितकाले यथोचितशिक्षणं समाजस्य दृष्टिकोणे सकारात्मकताम् आनयति, नवीनाकांक्षाः पूरयितुम् अभिरुच्यात्मकं परिवर्तनं निर्दिशति, विषमपरिस्थितिषु च धैर्यं प्रदाय उत्साहवर्धनं करोति। समये समये पाठ्यक्रमस्य नियमितपुनर्वीक्षणेन एतत् सर्वं सरलतया साधयितुं शक्यते। यथा स्थिरं जलं कालेन निरुपयोगि जायते, पर्युषितं च जलं केवलं दुर्गंधमेव जनयति, तथैव स्थिरः पाठ्यक्रमः अपि शिक्षणस्य निर्जीवयन्त्रमात्रं भूत्वा किमपि उद्देश्यं पूरयितुं न शक्नोति।

पाठ्यचर्याविकासान्तर्गते पाठ्यसामग्रीनिर्माणम् अन्तरंगीभूतम् आवश्यकम् अङ्गमस्ति। अस्य माध्यमेन कस्यचित् विषयविशेषस्य उद्देश्यानां पूर्त्तिः भवति, अपिच एषः वर्तमानपरिस्थितिषु अनुपयोगिनः विधीन् परिहृत्य आधुनिकतमान् नवीनविधीन् प्रस्तौति।

एतदेव उद्देश्यं मनसि निधाय देशस्य विभिन्नेभ्यः प्रदेशेभ्यः शिक्षाविदः समये समये अपेक्षिपरिवर्तनानि अधिकृत्य विचारमन्थनं कुर्वन्ति। एतेषां मन्त्रणानां फलस्वरूपमेव राष्ट्रीयपाठ्यक्रमरूपरेखायाः निर्माणं जातम् यत्र विभिन्नेषु प्राथमिक–माध्यमिकवरिष्ठमाध्यमिकेषु च स्तरेषु शिक्षायाम् अपेक्षितपरिवर्तनानि विस्तरेण सूचीबद्धानि कृतानि।

एनां रूपरेखाम् अन्ताराष्ट्रिय–सामाजिकापेक्षाः च मनसि निधाय अस्माभिः माध्यमिकस्तरे सर्वेषामेव विषयाणां पाठ्यक्रमाणां पुनर्वीक्षणं कृतम् येन ते आधुनिकतमाः भूत्वा तत्कालीनाः अपेक्षाः पूरयितुं सक्षमाः भवेयुः। एषा शैक्षणिकसामग्री भवतां कृते रुचिपूर्णा आकर्षिका मैत्रीभावसंयुक्ता च भवेत् इति अस्माकं विशेषः एव प्रयासः।

अस्य पाठ्यक्रमस्य निर्माणे ये ये मूर्धन्याः विषयनिष्णाताः विद्वांसः विदुष्यश्च आत्मनः अमूल्यं सहयोगं प्रदत्तवन्तः, तेभ्यः अहं संस्थानपक्षतः हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयामि।

राष्ट्रियमुक्तविद्यालयीसंस्थानपक्षतः युष्माकम् उज्ज्वलभविष्याय अनेकाः शुभाः आशंसाः।

(डॉ. एस एस जेनाः)
अध्यक्षः,
राष्ट्रीयमुक्तविद्यालयीशिक्षासंस्थानम्

निदेशकपक्षतः

प्रियविद्यार्थिन्

राष्ट्रीयमुक्तविद्यालयी शिक्षा संस्थानम् भवतः आवश्यकताः अपेक्षाः च लक्षीकृत्य समयेसमये नवीनान् कार्यक्रमान् आनेतुं प्रयतते। इनानीं अस्मामिः माध्यमिनस्तरे सर्वेषां विषयापनं पाठ्यक्रमाण्नं पुनर्वीक्षणस्य उत्तरदायित्वनिर्वहणं कृतम्। भवतां पाठ्यक्रमः अपि अन्यशैक्षिक संस्थानां पाठ्यक्रमंः सह समस्तरीयः भवेत् इत्यर्थम् अस्मामिः केन्द्रीय-माध्यमिक शिक्षा संघटनेन उत्तरप्रदेशमाध्यमिक शिक्षासंघटनेन महाराष्ट्र-मध्यप्रदेश-गोआ जम्मूकश्मीर पश्चिमबंगीदीनां च शैक्षिकसंघटनैः निर्मिताः पाठ्यक्रमाः अवलोकिताः राष्ट्रियशैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षणपरिषद निर्मिता राष्ट्रियपाठ्यक्रम-रूपरेखा अपि सन्दर्भालेखरूपेण परिवीक्षिता। एतेषां सर्वेषामालेरवानां सम्यग् अध्ययनं विधाय अस्मामिः दृष्टं यत् अस्माकं पाठ्यक्रम अधिकः प्रायोगिक।, जीवनस्य परिस्थितिमिः सम्बद्धः सरलतमच्च वर्ततें। अतः एनम् अधिकं प्रभाविनं उपयोगिनं च विधातुं वयं प्रयत्नशीलाः अभवाम। अस्मामिः देशस्य अग्रण्यः शिक्षाविदः आमन्त्रिताः तेषां मार्गदर्शने च एवं पाठ्यक्रमं पुनर्वीक्षितुं आधुनिकतमञ्च एवं विधातुं अस्माकं प्रयत्नाः सफलाः जाताः।

अस्मिभेव प्रयासे अस्मामिः भवतः सकाशे या सामग्री प्रेष्यते, तस्य पुनर्वीक्षणं कृतम्। पुरातनीम् अनावश्यकीं सामग्रीं निरस्तीकृत्य नूतनाः आधुनिरतमाः विषयाः योजिताः येन इयं आकर्षिका रूचिकरा च भवेत्।

इयं सामग्री भवता कृतं रूचिपूर्णा उत्साहवर्धका च संत्स्यति इति वयम् आशास्महे। यदि भवभिह् किमपि संशोधनं संवर्धनं वा अत्र अपेक्ष्यते, तेषां सर्वेणं प्रस्तावनां अत्र मूनं स्वागतं भविष्यति।

भत्पक्षतः युष्माकंम् उज्ज्वलभविष्याम अनेकाः शुभाः आशंसाः।

(डॉ. कुलदीपअग्रवालः)
निदेशकः,
राष्ट्रीयमुक्तविद्यालयीशिक्षासंस्थानम्

किञ्चिद् वक्तव्यम्

प्रिया: छात्रा:

भवताम् हस्तेषु माध्यमिकवर्गस्य संशोधितं पुस्तकं प्रस्तुवन् हर्षम् अनुभवामि। पाठ्यक्रमोऽयं भवतां पृष्ठभूमिं विलोक्यैव निर्मित:। अत्र अस्माकं प्रयास: अस्ति यत् पुस्तकद्वयं भवतां कृते उपयोगि भवेत्। भवन्त: मनोयोगेन पुस्तकं पठन्तु, शब्दार्थान्, व्याख्या:, व्याकरणबिन्दून्, प्रश्नोत्तराणि, ज्ञानवर्धनाय अवश्यमेव पठन्तु। यदि काचित् कठिनता अनुभूयते चेत् संस्थानस्य व्यक्तिगतसंपर्ककार्यक्रमे भागं गृहीत्वा समस्यां दूरीकर्तुं शक्नुवन्ति। यदि तत्र शंकाया: समाधानं न भवति तदा अस्मान् पत्रं लिखन्तु अथवा अस्माकं वेबसाइट www.nios.ac.in इति अंतर्जाले अपि सूचयितुं शक्नुवन्ति। अयं पाठ्यक्रम: भवतामेव भवतां कृते च वर्तते। वयम् आशास्महे, इदं संशोधितं पुस्तकं पाठ्यक्रमो वा भवताम् रुचिं वर्धयिष्यिति तथापि वयं भवतां प्रतिक्रियां प्रतीक्षामहे।

भवतां जीवने सदैव सर्वे मनोरथा: परिपूर्णा: भवन्तु इति अभिलषन्तो वयं शैक्षिकवर्षाय शुभकामना: दद्म:।

धन्यवादा:

भवदीय:

राम नारायण मीणा

शैक्षिक अधिकारी (संस्कृतम्)

e-mail: rnmeena@nios.ac.in

अपने पाठ कैसे पढ़ें !

आपकी पाठ्य सामग्री संस्कृत क्षेत्र के विद्वत्गणों की समिति ने तैयार की है। इसे विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें अतएव इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकेत आपको सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है आइए जानें–

पाठस्य शीर्षकम् :- इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते है कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

भूमिका :- यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए। साथ ही यह विषय की प ष्ठभूमि देगा तथा आपको पाठ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

उद्देश्यानि :- प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए।

बोधप्रश्नाः :- कुछ पाठों में आपकी आरंभिक पढ़ाई की जाँच–परख के लिए कुछ वस्तुनिष्ट प्रश्न दिए गए हैं। इन्हें करने से आप अपनी जाँच करके आगे बढ़ सकते हैं।

क्रियाकलापः :- पाठ में स्थान-स्थान पर कुछ क्रियाकलाप दिए जा रहे हैं जिन्हे आप सरलता से कर पाएँगे। ये आपको बेहतर ढंग से पाठ के बिंदु समझने में मदद करेंगे। इसमें आप से पाठ में चर्चित विषयों से संबंधित कुछ गतिविधियाँ दी गई अथवा जो आपको विषय के और निकट लाएँगी। आप उन्हें स्वयं करने का प्रयत्न करें अथवा घर में बड़ों से अथवा साथियों से चर्चा करें। ये क्रियाकलाप आपमें जीवन कौशल विकसित करेंगे तथा व्याकरण का अभ्यास भी कराएँगे।

इदानिं मूलपाठं पठामः :- पाठ की संपूर्ण सामग्री को कई अंशों में विभाजित किया गया है जिससे कि आप एक-एक कर इन्हें पढ़ें और दक्षता पाते चलें। इन्हें आप ठीक तरह से समझें। मूल पाठ को सही ढंग से समझने के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए जा रहे हैं। ये वाचन के समय आपकी सहायता करेंगे। इन्हें याद कर लीजिए। संपूर्ण पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और जहाँ जरूरत समझें पन्ने के हाशिए में दिए गए स्थान पर टिप्पणियाँ भी लिखते चलें।

अधुना पाठम् अवगच्छामः :- इसके अंतर्गत पाठ को विस्तार से समझाया गया है। कहीं कविता को खंडों में विभाजित करके तो कहीं गद्य को तत्वों के आधार पर। इसके उद्देश्य सरल भाषा में आपको पाठ समझाना तथा भाषा कौशल बढ़ाना है।

प्रत्येक पाठ में किसी संकल्पना के बाद उदाहरण देकर विषय को स्पष्ट किया गया है। ये उदाहरण आपको संकल्पनाएँ समझने में मददगार सिद्ध होंगी। उन्हें रुचि के साथ पढ़िए।

पाठगतप्रश्नाः :- इसमें एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारित हैं इनका उत्तर आपको देते चलना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढ़ते चलिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से मिलाइए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।

किमधिगतम् :- यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है–कहीं यह बिंदुओं के रूप में है, कहीं आरेख के रूप में तो कहीं प्रवाह चार्ट के रूप में। इन मुख्य बिंदुओं का स्मरण कीजिए। यदि आप कुछ अपने मतलब की मिलती-जुलती नई बातें जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।

योग्यताविस्तारः :- प्रत्येक पाठ का यह अंश उन विद्यार्थियों के लिए है जो पाठ से संबंधित अन्य इतर ज्ञान प्राप्त करने के जिज्ञासु रहते हैं। उनकी प्यास बुझाने के लिए हम कुछ अन्य जानकारियाँ और स्रोत बताते हैं। जैसे संबंधित पाठ किसने लिखा, क्यों लिखा, और क्या-क्या उस लेखक या कवि ने लिखा आदि। इसके अंतर्गत दी गई जानकारी में से परीक्षा में मूल्यांकन नहीं होगा।

पाठांतप्रश्नाः :- पाठ के अंत में दिए गए लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। इन्हें आप अलग पन्नों पर लिख कर अभ्यास कीजिए। यदि आप चाहें तो अध्ययन केंद्र पर अपने शिक्षक या किसी अन्य व्यक्ति को दिखा भी सकते हैं और उन पर नए विचार ले सकते हैं।

पाठ्य सामग्री

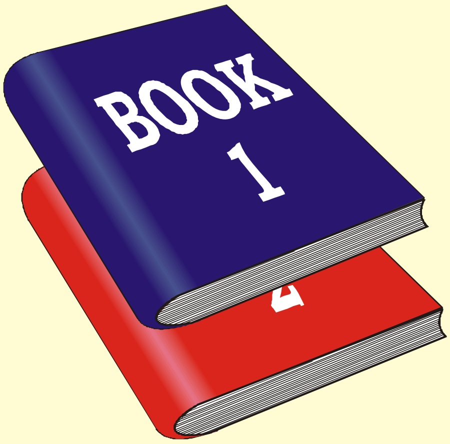

पुस्तक 1

1. सुभाषितानि
2. प्रेरणा
3. त्याज्यं न धैर्यम्
4. कस्मात् किं शिक्षेत
5. प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्
6. यद्भविष्यो विनश्यति
7. अयोध्यां प्रत्यागमनम्
8. विरहकातरं तपोवनम्
9. भारतीयविज्ञानम्
10. प्रहेलिका
11. रचनाकौशलम्

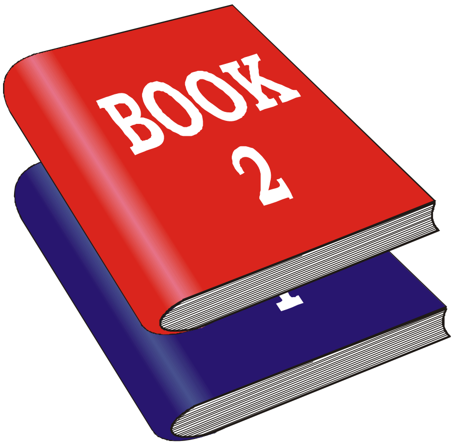

पुस्तक 2

12. यक्ष-युधिष्ठिर-संवाद
13. करुणापरा हि साधव:
14. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
15. ईश:क्व अस्ति
16. गीतामृतम्
17. स्वस्तिपन्थामनुचरेम
18. कर्तव्यनिष्ठा
19. पुत्रोऽहं पृथिव्या:
20. सत्याग्रहाश्रम:
21. तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते
22. पत्रलेखनम्

विषय-सूची

12.	यक्ष-युधिष्ठिर-संवाद	–	पद्यम्	1
13.	करुणापरा हि साधवः	–	कथा	21
14.	शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्	–	पद्यम	39
15.	ईशःक्व अस्ति	–	पद्यम्	55
16.	गीतामृतम्	–	पद्यम्	69
17.	स्वस्तिपन्थामनुचरेम	–	पद्यम्	88
18.	कर्तव्यनिष्ठा	–	कथा	105
19.	पुत्रोऽहं पृथिव्याः	–	पद्यम्	124
20.	सत्याग्रहाश्रमः	–	पद्यम्	140
21.	तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते	–	नाटकम्	162
22.	पत्रलेखनम्	–	रचना	180
	पाठ्यक्रम			
	अनुक्रमणिका-II &III			
	Question Paper Design			
	आदर्शप्रश्नपत्रम्			